

# जवान लड़की : कमसिन कम्मो की स्मार्ट चूत-1

“ यह कहानी है गाँव की एक जवान लड़की की... वो मुझे एक शादी के कार्यक्रम में मिली थी. मैं उसकी अनगढ़ अल्हड़ जवानी को चखना चाहता था. ... ”

Story By: Sukant Sharma (sukant7up)

Posted: Tuesday, October 30th, 2018

Categories: [जवान लड़की](#)

Online version: [जवान लड़की : कमसिन कम्मो की स्मार्ट चूत-1](#)

# जवान लड़की : कमसिन कम्मो की स्मार्ट

## चूत-1

अन्तर्वासना की मेरी प्रिय पाठिकाओ और पाठको,  
यह कहानी है गाँव की एक जवान लड़की की... वो मुझे एक शादी के कार्यक्रम में मिली थी. मैं उसकी अनगढ़ अल्हड़ जवानी को चखना चाहता था.

मेरी पिछली कहानी

### बहूरानी के मायके में शादी और चुदाई

मैंने बताया था कि मैं और बहूरानी उनके चचेरे भाई की शादी में दिल्ली पहुंचे हुए थे जहां मैं अपनी अदिति बहूरानी को बंजारन के वेश में देखकर उस पर मोहित हो गया था और येन केन प्रकारेण उसकी मचलती नंगी जवानी को भोगने में कामयाब भी हो गया था. उसी शादी में मुझे कमलेश नाम की ग्रामीण बाला भी मिली थी जो कि रिश्ते में मेरी बहूरानी की भतीजी लगती थी यानि मैं एक तरह से उसका दादाजी लगता था. कमलेश के बारे में मैंने पिछली कहानी में बड़े विस्तार से लिखा था जिसमें मैंने उसके व्यवहार और रूप रंग और उसकी कामुक चेष्टाओं का विशद वर्णन किया था. कमलेश को सब लोग कम्मो नाम से ही बुलाते हैं तो अब मैं भी उसे इस कहानी में कम्मो नाम से ही संबोधित करूंगा.

तो पिछली कथा में बात यहां तक पहुंची थी कि बहूरानी ने मुझे कहा था कि मैं कम्मो को मार्केट ले जाऊं और उसे नया स्मार्टफोन दिलवा दूं ; पैसे तो कम्मो के पास हैं.

तो मित्रो, पिछली कहानी से आपको याद होगा कि पिछली रात हम सब लोग साथ में डिनर कर रहे थे और कम्मो मुझे बड़े प्यार और अनुराग से सर्व कर रही थी ... कभी दही बड़े, कभी रसगुल्ला कभी कुछ कभी कुछ. कहने का मतलब यह कि मुझे अपनी जगह पर

से उठाना नहीं पड़ा और कम्मो ने काउन्टर से खाना ला ला कर भरपेट से कुछ ज्यादा ही खिला दिया था. उसके इस चाहत भरे खुशामदी व्यवहार को मैं समझ रहा था कि उसे कल मेरे साथ मार्केट जा के नया फोन जो लेना था.

अब नया फोन लेने की उमंग तरंग क्या कैसी होती है उसका तो हम सबको अनुभव है ही ... पर गाँव की कोई लड़की जो अभी तक नोकिया का बाबा आदम के जमाने का टू जी फोन इस्तेमाल कर रही थी, उसका मन कैसे ललचाता होगा स्मार्टफोन की स्क्रीन पर उंगली फेरने को या व्हाट्सएप, फेसबुक पर अपना खुद का अकाउंट खोलने को और सबसे चैट करने को ; क्योंकि अब तो ये सब एप्स गांव गांव में मशहूर हैं और जब वो दिन आ ही जाए कि बस अपना नया फोन मिलने ही वाला है तब दिल कैसे खुश और बेकरार रहता है, इस अनुभव से हम सब गुजरे हैं कभी न कभी ; वही हाल कम्मो का भी था.

तो अगले दिन सवेरे करीब नौ बजे मैं और कम्मो मार्केट जाने के लिए तैयार थे. कम्मो सजधज ली थी अपने हिसाब से ; वो जितना खुद को सजा सकती थी, उसने सजा लिया था. अच्छे से बाल संवार कर चोटी गूथ ली, आँखों में काजल डाल लिया और नया सलवार कुर्ता और दुपट्टा, मेहंदी तो उसके हाथों में पहले ही लगी थी ; कहने का लब्बो लुआब यह कि वो खुद को जितना टिपटॉप कर सकती थी, उसने कर लिया था. वैसे खूब सुन्दर लग रही थी वो.

“चलें कम्मो ?” मैंने कहा.

“अंकल जी एक मिनट, पैसे लेना तो मैं भूल ही गयी.” वो बोली और भागती हुई किसी कमरे में गयी. वापिस लौटी तो उसके हाथ में रूमाल की पोटली सी थी जिसमें उसके पैसे बंधे हुए थे.

“लो अंकल जी. पैसे आप रख लो. बहुत दिनों से जोड़ रही थी मैं फोन के लिए !” वो बोली और रूमाल मुझे दे दिया.

मैंने रूमाल खोला तो उसमें तरह तरह के नोट बेतरतीब ढंग से उल्टे सीधे मुड़ेतुड़े हुए रखे थे ; दस, बीस, पचास, सौ ... सब तरह के नोट थे. चार छह नोट पांच पांच सौ के भी थे. अब ये लोग तो ऐसे ही पैसे जोड़ के रखते हैं; जब कभी रुपये हाथ आये तो तह करके रूमाल में बांध लिए. मैंने सारे नोट ठीक ढंग से सेट किये और गिने तो कोई आठ हजार चार सौ कुछ निकले. अब ऐसे चिल्लर नोट ले के फोन खरीदने जाना मुझे बड़ा अटपटा सा लग रहा था तो मैंने अपनी बहूरानी अदिति को बुला कर वो नोट उसे दे दिए और कम्मो को समझा दिया कि ऐसे छोटे छोटे नोट लेकर कुछ खरीदने जाना अच्छा नहीं लगता और उसके फोन का पेमेंट मैं कर दूंगा अपने अकाउंट से.

“पापा जी, कम्मो कह रही थी कि इसे लालकिला भी देखना है. तो इसे आप वहां भी घुमा देना पहले, फिर चांदनी चौक या करोलबाग से फोन खरीद देना.” बहूरानी बोली.  
“ठीक है बहू. तो तू पहले कोई टैक्सी बुक कर दे लालकिले के लिये” मैंने बहू से कहा तो उसने अपने फोन से ऊबर की कैब बुक कर दी.

कैब शायद कहीं पास में ही थी, तीन चार मिनट में ही आ गयी. मैंने कैब का दरवाजा खोल कर पहले कम्मो को बैठने दिया फिर खुद जा बैठा और हम चल दिए लाल किले की ओर.

तो दोस्तो, इस तरह मैं और कम्मो तैयार होकर धर्मशाला से निकल लिए.

शादी तो रात में ही होनी थी, लौटने की कोई जल्दी भी नहीं थी. मैंने सब कुछ पहले ही प्लान कर रखा था कि पहले थोड़ा घूम फिर कर किसी रेस्टोरेंट में लंच करेंगे उसके बाद फोन खरीद कर दिल्ली के नज़ारे देखते हुए शाम तक वापिस लौटेंगे.

मेरे संग टैक्सी में बैठी हुई कम्मो बहुत उत्साहित थी. वो सबकुछ बड़े अचरज से देख रही थी जो कि स्वाभाविक भी था. गाँव की बाला जिसने अभी तक अपने खेत खलिहान ही देखे थे या आसपास कहीं किसी कस्बे में कभी कभार जाना हुआ होगा. दिल्ली की भीड़, ट्रैफिक,

गगनचुम्बी इमारतें और सजे धजे बाज़ार ये सबकुछ अचंभित कर रहा था उसे.

“अंकल जी कितने ऊंचे ऊंचे मकान हैं न यहाँ पर ?” वो आश्चर्य से भर कर बोल पड़ी.  
“हां कम्मो, दिल्ली में और बड़े शहरों में ऐसे ही ऊंची ऊंची बिल्डिंग्स बनने लगी हैं अब.  
जगह की कमी है न सो कम जगह में कई मंजिला बिल्डिंग में बहुत से परिवार रह सकते हैं.” मैंने उसे समझाया.

टैक्सी में पिछली सीट पर कम्मो मेरे दायीं तरफ निकट ही बैठी थी, सट के तो नहीं पर हां काफी नजदीक थी कि उसके बदन से उठती हल्की हल्की सी आंच या तपिश मुझे महसूस होने लगी थी. सहारे के लिए कम्मो ने अपना बायां हाथ अगली सीट पर रख रखा था जिससे उसका मेरी साइड वाला स्तन अपने कहर ढाने वाले अंदाज में लुभाने लगा था. उसका उभार उसकी उठान मुझे आमंत्रित सी करती लगती कि दबोच लो, मसल दो या छू ही दो या अपनी कोहनी मार के छेड़ ही दो, हिला दो मुझे.

कम्मो मेरे मन में उठ रहे इन विचारों से अनजान सी बाहर के दृश्य देखने में मगन थी. मैंने जैसे तैसे खुद पर काबू पाया और अपना फोन निकाल कर यूं ही टाइम पास करने लगा. लालकिला तक पहुँचने में कम से कम एक सवा घंटा तो लगना ही था ; फिर जैसे ट्रैफिक मिले उस पर भी निर्भर था.

थोड़ी देर यूं ही चलते हुए कैब रेड लाइट पर रुक गयी.

“अंकल जी वो देखो गोलगप्पे वाला, हम यहां रुक कर गोलगप्पे खा सकते हैं न ?” कम्मो ने उंगली से इशारा करते हुए मुझसे कहा.

मैंने कम्मो की जांघ पर एक हाथ रखकर आगे झुक कर टैक्सी से बाहर देखने का उपक्रम किया. कुंवारी जवान लड़की की जांघ पर हाथ धरते ही उत्तेजना की लहर मेरे पूरे जिस्म में बिजली की तरह दौड़ गयी ; मैंने देखा कि परली तरफ वाली पटरी पर कोई गोलगप्पे का टेला लगाए था.

“कम्मो ऐसे नहीं रुक सकते यहां, गोलगप्पे भी खा लेंगे अभी बाद में!” मैंने कहा.  
“ठीक है अंकल जी!” वो संक्षिप्त स्वर में बोली. मेरा हाथ अभी भी उसकी जांघ पर रखा हुआ था जिसे हटाने का उसने कोई प्रयास नहीं किया.

“कम्मो, और बता तुझे क्या क्या पसंद है खाने में. आज तेरी हर फरमाइश पूरी होगी?” मैंने कहा और उसकी जांघ को हौले से सहलाया. बस इतने से ही मेरे लंड में तनाव भर गया.

“अंकल जी, जो जो आप खिला दोगे, मैं तो सब खा लूंगी आज. बहुत भूखी हूं मैं!” उसने मेरी ओर कनखियों से देखते हुए हंस कर जवाब दिया और अपना सिर सामने वाली सीट से टिका दिया. छोरी कम नहीं थी ... इतना समझ आ गया मुझे! और अब मुझे कम्मो को चोद पाने की अपार संभावनाएं नजर आने लगीं थीं.

कम्मो की चूत के बारे में सोचते ही मेरा लंड हिनहिनाया. मैंने देखा कि कम्मो ने अब अपने पैर खोल लिए थे और अगली सीट से सिर टिकाये झुकी हुयी नज़रों से अपने पैरों की तरफ देख रही थी. तो कम्मो का यूं अपनी टाँगें चौड़ी कर देना क्या मेरे लिए आमंत्रण था या वो सिर्फ अपने कम्फर्ट के लिए पैर ऐसे किये बैठी थी?

यह सोचते हुए मैं किसी नतीजे पर नहीं पहुंच पाया. मेरी कोई भी हरकत या ओवर एक्टिंग मुझे महंगी भी पड़ सकती थी. यही सोच कर मैंने अपने कदम फूंक फूंक कर रखने का फैसला किया.

“कम्मो बताओ न लंच में क्या क्या खाने का मन है तेरा?” मैंने अपने हाथ का दबाव उसकी जांघ पर बढ़ाते हुए पूछा.

“हम्म ... अच्छा सोच के बताती हूं.” वो बोली और फिर थोड़ी सीधी होकर सीट से टिक कर बैठ गयी और अपना सिर ऊपर करके सीट की पिछले हिस्से पर टिका लिया और आँखें बंद कर लीं जैसे गहरे सोच में हो.

इधर मेरी उंगलियां फड़क रहीं थीं कि मैं उसकी चूत को सलवार के ऊपर से थोड़ा सा छू कर ही देख लूं. लेकिन मैंने ऐसा करने की हिम्मत या हिमाकत फिलहाल मैंने नहीं की.

“अंकल जी. मैं इडली डोसा वगैरह खाऊंगी. कई साल हो गये एक शादी में खाया था. तब से नहीं मिला खाने को. हमारे गांव में तो कोई बनाता नहीं ऐसी चीजें!” वो सोचकर बोली. “वैरी गुड. कम्मो ... मेरा भी यही सब खाने का मन था.” मैंने उसकी हां में हां मिलाई. कम्मो ने मुझे मुस्कुरा कर देखा और मेरा हाथ अपनी जांघ पर से उठा कर धीरे से मेरी गोद में रख दिया और उसकी उंगलियां मेरे अलसाए से लंड को कुछ पलों तक टच करती रहीं.

ऐसा कम्मो ने जानबूझ कर किया था या यूं ही उसका हाथ मेरे लंड पर पड़ गया था, मैं कुछ समझ नहीं पाया. पर मेरे मन में खलबली जरूर मच गयी थी. मैं कम्मो को कल से वाच कर रहा था जब वो उन लड़के लड़कियों के साथ मस्ती कर रही थी और ऐसा लगता था कि उसकी उमड़ती भरपूर जवानी उसे चैन नहीं लेने दे रही है और उसकी चूत चीख चीख कर लंड मांग रही है. छोरियों की ये कमसिन उमर होती ही ऐसी है न इन्हें उठते चैन न बैठते चैन और इनके बूक्स में हल्का हल्का मीठा मीठा दर्द हमेशा बना रहता है जिसे किसी मर्द के हाथ ही दूर कर सकते हैं और इनकी चूत का दाना पैंटी से रगड़ रगड़ कर चूत में खुजली किये रहता है और इन्हें चैन नहीं लेने देता.

इस बार मैंने थोड़ी हिम्मत करने की सोची और ...

“अच्छा कम्मो चलो अब जरूरी काम की बात करते हैं; ये बताओ तुम्हें फोन कौन सा चाहिये?” मैंने पूछा और उसकी पीठ पर हाथ रख कर अपना मुंह उसके मुंह के पास ले जा कर मध्यम स्वर में पूछा.

“अंकल, अच्छा वाला लूंगी मैं तो!” वो थोड़ा इठला कर बोली.

“अरे अच्छे से अच्छा ही दिलवाएंगे तुझे, मेरे कहने का मतलब तेरे फोन में तुझे क्या क्या देखना है?” ऐसा कहते हुए मैंने अपने हाथ की उंगलियों से उसकी पीठ पर हारमोनियम सी

बजाई. बदले में वो स्ट्रेट हो कर बैठ गयी और मेरा हाथ अपनी पीठ से हटा दिया.

“अंकल जी ऐसे गुदगुदी मत करो मुझे बस !” वो थोड़ा रोष से बोली.

“अरे तो क्या हो गया, तू मेरी प्यारी प्यारी छोटी नन्ही मुन्नी सी गुड़िया है न. मेरा हक है तुझपे, अरे जब तू इत्ती सी थी न, तब तू पूरी नंगी मेरी गोद में खेला करती थी. याद है न ?” मैंने सरासर झूठ बोलते हुए इत्ती सी कह के अपने हाथों से इशारा करके उसे बताया. “मुझे कुछ याद नहीं अंकल जी ... आप मुझे बना तो नहीं रहे न ?” कम्मो ने असमंजस से मेरी तरह देखा. वो खुद श्योर नहीं थी कि मैं सच कह रहा था या झूठ.

“अरे बेटा, मैं काहे को झूठ बोलूंगा. तुझे न मानना हो तो मत मान !” मैंने थोड़ी रोनी सी सूरत बना के कहा.

“अच्छा अच्छा ठीक है अंकल जी. मुझे विश्वास है आपकी बात पर !” वो जल्दी से बोली.

जाहिर था मेरी रोनी सी सूरत देख के वो मुझपर भरोसा कर गई थी.

“तो फिर तू पहले की तरह बैठ न मेरे बिल्कुल पास, इतने सालों बाद मिली है आज !” मैंने कहा और उसकी कमर में हाथ लपेट कर उसे अपने से चिपका लिया. उसका मेरी तरफ वाला मम्मा मुझसे आ लगा. नर्म गर्म मुलायम बूब के स्पर्श से मुझे रोमांच सा हो आया. जवान लड़की के नाजुक अंगों का किसी मर्द से स्पर्श लड़की को भी बेचैन कर ही डालता है सो वही अनुभूति कम्मो को भी जरूर हुई होगी तभी वो मुझसे एक मिनट बाद ही दूर खिसक गयी.

“अंकल जी, ये सब बातें लालकिले में करेंगे. अभी तो आप फोन की बात कर रहे थे न वही बताओ ?”

“हां, अच्छा ये बता कि तुझे अपने फोन में क्या क्या चाहिये ?” मैंने पूछा.

“अंकल, गाने बजना चाहिये और वो फेसबुक और भाटइसएप भी चाहिये मुझे. गाँव में मेरी कई सहेलियों के फोन में भाटइसएप है और वो सब अपनी फोटू खींच खींच कर सबको



भेजती हैं।” वो बड़ी मासूमियत से बोली.

“अरे भाटइसएप नहीं पगली, व्हाट्सएप्प कहते हैं उसे !” मैंने उसे समझाया.

“हां हां मतलब वही. वो तो जरूर चाहिये मुझे !”

“हां हां व्हाट्सएप्प भी होगा तेरे फोन में. तुझे चलाना तो आता है न ?”

“हां आता है न अंकल जी. गांव में मेरी सहेलियों के फोन से मैंने भाटइसएप खूब चलाया है. आपके फोन में भी होगा न आप दिखाओ मुझे अच्छा ?” कम्मो बोली.

मैंने अपना फोन निकाला और उसे अनलॉक करके कम्मो को दे दिया. कम्मो फोन की स्क्रीन देखने लगी. व्हाट्सएप्प का आइकॉन सामने ही था.

“देखो अंकल जी ये हरा वाला गोला जिसमें फोन का निशान है यही है न भाटइसएप ?” वो खुश होकर बोली.

“हां कम्मो यही है, तू तो बड़ी होशियार है री !” मैंने हंस कर कहा.

“और ये रहा फेसबुक !” उसने मुझे दिखाया.

“अरे तू तो सब जानती है. चल तुझे इससे भी बढ़िया फोन दिला देता हूं.” मैंने कहा.

“ठीक है अंकल जी. मैं आपका फोन देखूं थोड़ी देर ?” उसने पूछा.

“हां हां देख ले. इसमें पूछना क्या ?” मैंने उसे कहा.

“ठीक है अंकल जी मैं तो भाटइसएप चला कर देखूंगी अभी !” वो बोली और उसने व्हाट्सएप्प पर टच करके उसे ओपन कर दिया और मेरे कॉन्टेक्ट्स के कन्टेन्ट्स देखने लगी.

मैं टैक्सी की खिड़की की तरफ खिसक गया और बाहर देखने लगा पर मेरा ध्यान फोन पर भी था क्योंकि मैं अपने कुछ दोस्तों से एडल्ट कंटेंट्स भी शेयर करता था. लड़कियों के नंगे फोटो, वीडियो, अश्लील जोक्स वगैरह. मैं यही चाह रहा था कि कम्मो वो सब देख ले

तो मेरा मिशन और आसान हो जाएगा.

और कम्मो ने वही किया. उसने मेरे एक ऐसे ही दोस्त का मैसेज खोल दिया. फोन की स्क्रीन पर देसी नंगी जवान लड़की अपने पैर खोले एक हाथ में फुट भर लम्बा काला मोटा डिल्डो लिए चूस रही थी और दूसरे हाथ की उँगलियों से उसने अपनी चिकनी चूत खोल रखी थी.

वो फोटो खुलते ही कम्मो थोड़ी घबरा सी गयी और उसने फोन की स्क्रीन को अपने हाथ से छुपा लिया. इधर मैंने जानबूझ कर बाहर देखना चालू रखा, जैसे मुझे पता ही न हो कि कम्मो क्या देख रही है.

कम्मो भी टैक्सी की दूसरी ओर की खिड़की के पास खिसक गयी और मजे से वो सब क्सक्सक्स नंगे फोटो और चुदाई के वीडियो देखती रही. कोई तीन चार मिनट बाद ही कम्मो ने अपनी पैर अच्छी तरह से खोल दिये जिससे उसकी जांघें खूब चौड़ी हो गयीं फिर उसने मेरी तरफ कनखियों से देखा कि कहीं मैं उसे वाच तो नहीं कर रहा. फिर उसने मेरे मोबाइल में देखते हुए अपनी टांगों के बीच हाथ ले जाकर जल्दी जल्दी कहीं खुजाया और कुछ देर अपना हाथ वहीं रखे रही ; मैं समझ गया कि वो अपनी चूत का दाना मसल रही थी या चूत से खेल रही थी.

मैं टैक्सी के बाहर देख जरूर रहा था पर मेरा ध्यान कम्मो पर ही था कि वो क्या क्या कर रही है.

कोई पंद्रह बीस मिनट तक हो यूं ही मेरा फोन खंगालती रही. फिर उसने फोन वहीं सीट पर रख दिया और सामने वाली सीट से सिर टिका कर आँखें मूंद कर गहरी गहरी सांसें लेने लगी. सांस के उतार चढ़ाव के साथ उसके बूब्स भी जैसे उठ बैठ रहे थे. उसकी चूत भी जरूर पक्का गीली हो चुकी होगी.

मैंने जानबूझ कर उससे कोई बात नहीं की. मैं चाहता था कि वो सामान्य महसूस करने लगे

तब उससे कुछ कहूं.

फिर थोड़ी देर बाद ...

जवान लड़की की चाहत की कहानी जारी रहेगी.

[sukant7up@gmail.com](mailto:sukant7up@gmail.com)

## Other stories you may be interested in

### गुप सेक्स का ऑनलाइन मजा-1

नमस्कार, मैं सारिका आप सबका दिल से धन्यवाद देना चाहंगी. आप सबने मेरी पिछली कहानियों को खूब सराहा और मुझे प्रेरित किया कि मैं अपनी एक और कहानी लिखूँ. ये मेरी हाल की ही एक घटना है.. जिसे मुझे लगा [...]

[Full Story >>>](#)

### मेरी कमसिन जवानी की आग-3

राज अंकल अंकित के सगे फूफा हैं, अंकित राज अंकल से बोला- फूफा जी, किसी को मत बताना, मैं वन्द्या की चुदाई आप लोगों से अच्छे से करवा दूंगा, कोई दिक्कत नहीं है, यह बहुत सेक्सी लड़की है, बहुत चुदाती [...]

[Full Story >>>](#)

### देसी गर्ल: कमसिन कम्मो की स्मार्ट चूत-2

देसी गर्ल कम्मो मजे से वो सब नंगे फोटो और चुदाई के वीडियो देखती रही. फिर उसने मेरे मोबाइल में देखते हुए अपनी टांगों के बीच हाथ ले जाकर जल्दी जल्दी कहीं खुजाया और कुछ देर अपना हाथ वहीं रखे [...]

[Full Story >>>](#)

### मेरी कमसिन जवानी की आग-2

मैं बहुत डर गई और घबराने लगी, मैंने भी जल्दी से अपने कपड़े पहने और खड़ी हुई, अंकित से बोली- प्लीज़ मुझे बचा लो! ऐसे हम दोनों को टायलेट में अंदर देख लेंगे तो मैं किसी को मुंह दिखाने लायक [...]

[Full Story >>>](#)

### मेरी कमसिन जवानी की आग-1

मौसी की बेटी की शादी में शादी से पन्द्रह दिन पहले पहली बार एक साथ पांच बुड्ढों ने और एक जवान लड़का रिश्ते के भाई ने मेरी बेदम चुदाई की, इनमें दो मेरे सगे रिश्तेदार हैं, यह कटु सत्य घटना [...]

[Full Story >>>](#)

